खेल खेलाड़ी

आ

ओकर बोल

शारदा नन्द प्रसाद

卐

भोजपुरी साहित्य मन्दिर

किताब ● खेल-खेलाड़ी आ ओकर बोल

लिखनिहार ● शारदानन्द प्रसाद

दाम ● १.२५

छपवनिहार ● भोजपुरी साहित्य मन्दिर

छपनिहार ● गंगा प्रेस, जगतगंज, वाराणसी-२

जनवरी, १९७१

बुलू–प्रभात

पून्नू–विकास

ऋचा–सरिता

मनोरंजन

आउर

प्रियरंजन

के

जेकरा खेलनसे हमरा लरिकाईं के इसमिरती झलकता

एहसान मानतानी

- श्री राधेश जी के, जेकरा देख-रेख में ई किताब छपल।
- भोजपुरी साहित्य मंदिर के जे एह किताब के बाड़ा परेम से छापल।
- अपना लरिका लोगन के एह किताब के जरिए साबासी देत बानीं, जे भुलाइल खेलन के बोल मन पार-पारके लिखे में मदत कइल।

–लेखक

आपन बात

भोजपुरी बिहार आ उत्तर प्रदेश के सम्मिलित ऊ क्षेत्र ह, जहवां भोजपुरी प्रधान रुपसे बोलल जाला। एह क्षेत्र में छपरा, आरा, चम्पारन, बलिया, बनारस, गाजीपुर आ जौनपुर जिलन के सामिल कइल जा सकेला। एह क्षेत्र के बाल मण्डली में अनेक अइसन खेल परचलित बा जे मनोरंजन के साथ-साथ भासा के एक सूत में सबके बान्हे ला।

एह बाल खेलन के अनेक दृष्टि से महत्व बा। ई खेल आउर एकर बोल लइकन के जिनगी पर सुनर आ मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालेला। एह से लरिकन के मानसिक आ शारीरिक विकास त होखबे करेला भासा बोले में भी ई खेल तोतली बोली के लइकन के सहजोग करेला। तोतली बोली में संसार के कवनो भासा मीठ बन जाले। भोजपुर के ई खेल आ ओकर बोल मनोरंजन परम्परा, बतकही, सभ्यता, जिनगी बतावे के ढंग के समेटले माला के फूल जइसन आपन अस्तित्व लेके भी समूह रुप में एगो बेजोड़ सुन्दरता के सृष्टि करेला।

ई खेल लइकाई से लेके किशोरावस्था तक खेलल जाला। एह खेलन में लइका लइकी दुनो, भाग लेला। बहुत खेलन में त माई-बाप भी साथ देला। लइका लोग खेल बाड़ा पसन्न करेला। डेहुरी से बाहर होते-होते एह लोग के बाग ना आड़ाला। खेल के साथे-साथे ई लोग खेल के बोल भी बोलेला। जवना खेल में चार चान लाग जाला आ देखनिहार के धरनिहार लागेला। सुरु-सुरु में लइका लोग खेले के हालत में ना रहेला। तेपर ई लोग आपन हाथ गोड़ पटक-पटक के एकर कमी पूरा कर लेला। ए अवस्था में मतारी एह लोग के खेल का ओर

आर्कषित करेली। ई अवस्था छव महीना से लेके साल भर रहेला। सालभर के हो गइला पर ई लोग अपने से भी खेले के कोरसिस करेला। एह किताब में ओही खेल के बरनन होई जेके छव महीना से लेके चउदह बरिस के लइका, लइकी भोजपुर में खेलेलन।

पचरूखी,
तारीख २०-१२-७१

शारदानन्द प्रसाद
उच्च विद्यालय, पचरूखी
जिला सारन (बिहार)

शारदानन्द प्रसाद

●जनम के तारीख: २जनवरी, १९२९●

जनम-स्थान: गौरी, थाना: दरौली जिला सारन (बिहार) ● बाबूजी के नांव: परलोकवासी वंशीधर प्रसाद ● पढ़ाई-लिखाई: बी०कॉम० डिप-इन०एड●धंधा अध्यापन, गाँधी स्मारक विद्या-मन्दिर, पचरुखी, सारन (बिहार) ● साहित्यिक सिल-सिला: सचिव, साहित्यायन, पच-रुखी, सारन (बिहार), अनुमण्ड-लीय सचिव, सारन जिला भोजपुरी साहित्यसम्मेलन●प्रकाशित किताब: "पुरइन" (भोजपुरी कविता-संग्रह) 'भोजपुरी मुहावरा कोश', आ "खेल-खेलाड़ी आ ओकर बोल"●भोजपुरी के कविता आ लेख 'भोजपुरी जनपद' (मासिक के अनेक अंकन में छपल●माटी के सेवा चलरहल बा●

का--कांहां बा

खेल			पन्ना
१. घुघुआ माना	...	...	१
२. ओका बोका	...	...	३
३. आरा बारा	...	...	७
४. झुन-झुन तकली	...	...	७
५. के खँखारे	...	...	८
६. लूती-लूती दागीले	...	...	९
७. अन्हरिया अंजोरिया	...	...	१०
८. कोदो दरउअल	...	...	११
९. माटी जीतात	...	...	१२
१०. हरदी-गुरदी लायची	...	...	१२
११. मूस-बिलाई	...	...	१३
१२. राजा परजा	...	...	१४
१३. हमार घोड़ी बिरवनी	...	...	१५
१४. जय कन्हैया लाल की	...	...	१५
१५. घरौंदा-खेल	...	...	१६
१६. डेबा-डेबी	...	...	१७
१७. पंजा लड़ावल	...	...	१७
१८. चंदा मामा	...	...	१७
१९. अँखमुदउल	...	...	१७
२०. घोड़ा के खेल	...	...	१८

२१. घोघोरानी १९
२२. लँङूर चढ़ावल २०
२३. चिल्हिया चिल्होर २१
२४. मूतपिअना २१
२५. नीलीसारी पीलीसारी २२
२६. कुकुहा २३
२७. अन्हाथोपी २४
२८. बेटा लेब कि बेटी २५
२९. गुली डंटा २६
३०. आम छू-आम छू २८

●

घुघुआ माना

ई खेल मतारी के सहजोग से खेलल जाला। एह खेल में छव महीना से लेके पाँच बरिस तक के लइका भाग लेला। एह में लरिकन के बहुत मजा आवेला। मतारी बिछावन पर चिते लेट जाली। अपना ठेहुना के ऊपर काओर मोड़ के लइका के पंजा पर बइठा लेली आ बारबार अपना ठेहुना के आगे पीछे करेली। खेल के सिलसिला में मतारी बोल भी बोलेली। खेल के ई बोल बेमतलब के ना होखे। बहुत गम्भीर अर्थ ओमें छिपल रहेला।

गलर-गलर पूआ पाकेला
चिलरा खोईंछा नाचेला
जोरे चिलरा खेत खरिहान
ले अइहे तिलकिया धान
ओही धान के चिउरा कुटइब
बाभन बिसुन नेवता पेठइबो
बभना के पूतवा दीही असीस
बबूआ जीहें लाख बरीस

मतारी पूआ पकावतारी। कराही में पूआ गलर-गलर करता। पूआ के गमक पाके चिलरा गाँव के नोकर खुसी से

नाचता कि आज पूआ खाएके मिली। मतारी ओकरा से धान ले आवे के कहतारी। ओह धान के चिउरा कुटिहें। बाभन बिसुन के नेवता पठइहें। बाभन के बेटवा असीस दी। आ उनकर मुन्ना लखिया होइहें।

घुघुआ माना उपजे धाना
धनि-धनि भइले बबुआ के मामा
बबुआ के नाक-कान दुनु छेदइबो
सोनरा के देबो भरसूप धाना
सोनरा के पूतवा दोही असीस
बबुआ जीहें लाख बरीस।

धान के फसल खूब उपजल बा। एही बीचे बबुआ के मामा पहुँच गइले। मामा के अइला पर लइका लोग बड़ा खूस होला। महतारी कहतारी कि सोनार के बोलवा के नाक आ कान दुनु छेदवा देब। सोनार के इनाम में भरसूप धान देब। सोनार के बाल-बाचा हमके असीस दी आ हमार बबुआ ढेर दिनले जीहें।

भोजपुर में लरिकन के नाक कान छेदावे के चलन बा। मराछ लरिकन के नाक आ कुंडल पहिरे खातिर कान छेदाला।

घुघुआ माना मनेर से
सठिया के चउरा डेढ़ सेर
बबुआ खाले दुध भातवा
बिलइया चाटे पातवा

पातवा उधिया गइल
बिलइया लजा गइल

मतारी कहतारी कि मनेर से डेढ़ सेर साठी मँगवले बानी। ओकर भात आ दूध बबूआ खातारे बिलार उनकर जूठ पत्तल चाटतिया। एही बीच में पतल उधिया जाता आ बिलार लजा जातिया।

आखिर में मतारी आपन पंजा ऊपर उठावेली आ ओके धीरे-धीरे नीचे लेआवेली। एह सिलसिला में बोल भी बोलेली—

नाई भीति उठेले
पुरानी भीति गिरेले

मतलब ई कि नवका पीढ़ी के निर्माण हो रहल बा आ पुरनका पीढ़ी ढह रहल बा। एकरा बाद खेल खतम हो जाला।

●

ओका बोका

एह खेल में तीन से लेके चार लरिकन के जरूरत होला। एह खेल में पाँच से लेके बारह बरिस तक के लइका लोग भाग लेला। एगो लइका बोल बोलेला बाकी लइका दुनु हाथ के अँगुरी जमीन से टेक के आपन-आपन तरहथी ऊपर उठवले रहेलसन। बोल, बोले वाला लइका अपना दहिना हाथ के तरजनी से ओकनी के तरहथी के ऊपरी भाग छू-छू के बोल

बोलेला। बोल खतम भइला पर पारा-पारी ओकनी के तरहथी अपना हाथ से जाँत के जमीन से सटावत जाला।

ओका बोका, तीन तड़ोका
लउआ लाठी, चनन काठी
चनना के नाँव का
इजयी विजयी
पानवा फुलवा पूचूक

ओंकार (ओका) बोलला से सत, रज तम (तीन तड़ोका) तीनों के बन्हन टूट जाला। लुआठी लकड़ी चनन बन जाले। भगत जय-विजय (इजयी विजयी) के दरजा पा लेला। भगवान विष्णु के सानिध पावते ओकर पान फूल रुपी संसार के आकर्षण खतम हो जाला। आ भगत तिरगुनातीत हो जाला।

खेल के दोसरका सिलसिला फेरू जारी होला। बोल बोले वाला लइका सभ लरिकन के तरहथी के ऊपरी चाम धयके सभन से पारा-पारी पूछेला-चिऊँटा लेब कि चिऊँटी? चिऊँटा कहे वालन के चाम अपना दहिना हाथ के तर्जनी आ अंगूठा से जोर से धरेला आ ओकनी के तरहथी अपना लतरा हाथ के तरहथी पर धरत जाला जवना के ऊ जमीन से सटवले रहेला। चिऊँटी कहे वाला लरिकन के चाम धीरे से धरेला। ई काम खतम भइला पर ऊ अपना दहिना हाथ के तरहथी के उलट पलट के बाकी लरिकन के तरहथी के ऊपर धीरे-धीरे मारेला आ बोल-बोले ला।

अटक चटकन दही चटाकन
बर फूले बरइला फूले
सावन में करइला फूले
नेउरी गइली चोरी
धर कान ममोरी।

सावन में करइला के फुलाइल बड़ा नीक लागेला। करइला चोरावे वाला से सावधान रहे के चेतावल जाता। जदि नेउरी करइला चोरावे आवतिया त ओकर कान अईंठ द आ ओकर अतना पिटाई कर कि ओकरा छठी के दूध इयाद आ जाव।

एकरा बाद लइका लोग आमने-सामने बइठ जाला। ऊ लोग एक दूसरा के कान अपना दुनु हाथ से पकड़ लेला आ एक दोसरा के अपना ओर खींचेला। अइसन करेमें ऊ लोग अपना देह के आगे पीछे झुकावेला। सभ लोग मिलके बोल बोलेला!

चिऊँटा हो चिऊँटा
मामी के गगरिया
काँहे फोरल हो चिऊँटा
मामा के झगरवा
छोड़ाव हो चिऊँटा

ए चिउटा मामी के गगरिया काहे फोरल? लइका लोग जल्दी से आके, मामा-मामी लोग के झगड़ा छोड़ावता। आखिर में सब लइका लाता लूती करे लागेसन स।

खेल के तीसरका सिलसिला जारी होला। एगो लइका अपना लतरा गोड़के ऐड़ी जमीन से टेकके ऊपर उठवले रहेला। अपना लतरा हाथ से ऊपर अंगूठा के पकड़ के मुट्ठी उठल बान्ह लेला। आ अपना हाथ के अंगूठा के ऊपर उठा देला। ओकरा बाद सब लइका एक दोसराके दुनु हाथ के अंगूठन के पकड़त जाला। बाकी पहिला लइका अपना दाहिना हाथ के खाली रखेला आखिर में ऊ ओही हाथ से दोसरा लरिकन के हाथ के पारापारी हटावत जाला आ बोल बोलत जाला। कल्पना कइल जाला कि तरकुल के लमहर गाछ टाँगी से कटाता।

तार काटों तरकुल काटो
काटों बन के खाजा
हाथी पर के घुघुरा
चमक चले राजा
राजा के दोलइया
भइया के दो पाटा
घींच मार घींच मार
मूसरी के बाचा

तरकुल के लमहर फेंड़ के काट घाल। खाजा के काट ल। राजा हाथी पर घमंड से चलतारे आ जाड़ा में दोलाई ओढतारे बाकी गिरहथ लोग दुपट्टे से जाड़ा काट लेला। मूसरी के बील से खींच के मुआ द। मूसरी के मारे में लइका लोग के बरा मजा मिलेला।

●

आरा-बारा

तीन से लेके चार खेलाड़िन के एह खेल में जरुतर होला। ऊ लोग जमीन पर बइठ जाला आ आपन-आपन गोड़ आगे का ओर पसार लेला। ओह लोग का ओर मँह कके एगो लइका बइठ जाला। ऊ आपन दाहिना हाथ के ओह लोगके गोड़ पर दाहिना ओर से बायाँ ओर आ बायाँ ओरसे दाहिना ओर फेरत रहेला। आ खेल के बोल बोलत रहेला

आरा बारा मधुरी पियारा
अरवन सरवन खेत जोतेले
चिरइया कइसन बीया
खुदी चूनी खा के
ढिढ़क फुलवले बोया

खेत के मेढ़न पर बरे के पियर फूल बड़ा नीक लागता। सरवन नांव के हरवाह खेत जोतत बाड़े। खेत में के दाना चून-चून के खइला से चिरइन के ढिढ़ुक (पेट) फूल गइल बा।

●

भुन-भुन तकली

चार पांच खेलाड़ी एक दोसरा के हाथ पकड़ के एगो वृत बना लेले आ घूमरियाके नाचे लागेले। ऊ लोग खेल के सिल सिला में बोल भी बोलेला।

जोतला खेत में
तावा गिरे
तावा रे पुरानी
भइया के
झुनझुनवा गिरे
भौजी के चुहानी

खेत जोता गइल बा। बड़ा ताव गिरता। भइया के झुनझुनवा कोसिला भौजी के चूहानी गिरता।

आखिर में झुन-झुन तकली-झुन-झुन तकली ....नाँव के बोल बोलत खेलाड़ी लोग कुदे लागेला आ खेल खतम हो जाला।

●

के खँखारे

एह खेल में पाँचगो खेलाड़ी भाग लेले। ओमें से एगो लइका सीधे खड़ा रहेला। ऊ दुनु हाथ के अंगुरिन के एक दोसरा से फँसा के हाथ अपना मूड़ीं पर रखलेला। ओकरा दुनु कान्ह से एकहेगो लइका झूलत रहेलन स। कल्पना कइल जाला कि कटहर गाछ से लटकल बा। चउथा लइका मालिक बनेला। पाँचवाँ लइका राजा के कोतवाल बनके कटहर माँगे आवेला।

मालिक—मोरा पिछुअरिया के खँखारे।

कोतवाल—राजा कोतवाल।

मालिक—राजा का माँगेले ?

कोतवाल—खीरा, ककरी, कवल के फूल

राजा मँगले बतियवे तूर

फेंड़ के मालिक कान्ह से झूलत लइकन के मूड़ी ठोके के देखेला कि कटहर पाकल बा कि काँच बा। थोड़े देर में ओकनी के कान्ह से उतार के जमीन पर बइठा देले। ऊ लइका पलथी लगाके बइठ जालन स। मालिक आ कोतवाल ओकनी के काँख में हाथ लगाके टाँग लेला लोग आ राजा के लगे कटहर चहुँपा देला लोग। खेल खतम हो जाला।

●

लूती-लूती दागीले

दूगो लइका आमने-सामने खड़ा होके एक दोसरा के हाथ पकड़ लेला। आ हाथ उलट के एक दोसरा के कान्ह पर रख लेला। ओकरा बाद धीरे-धीरे चक्कर काटे लागे ले सन। एगो लइका सवाल करेला। दोसरका, लइकी के भासा में उत्तर देला।

सवाल—भतवा पकवलु हऽ ?

जबाब—हँऽ।

सवाल—दालवा पकवलु हऽ ?

जबाव—हँऽ ?

सवाल—तरकरिआ पकवलु हऽ ?

जबाब हँऽ।

सवाल—बाबू जी के खिअवलु हऽ ?
जबाब—हँऽ।
सवाल—माई के खिअवलु हऽ ?
जबाब—हँऽ।
सवाल—अपने खइलुहऽ ?
जबाब—हँऽ।
सवाल—हमार बखरवा ?
जबाब—बिलार ले गइल।

एकरा तुरत बाद ऊ लइका जोर से चक्कर काटे लागेलेसन आ बोल-बोले लागेलेसन।

आवेली बिलारो दाई
लूती-लूती दागिले।
आवेली बिलारो दाई
लूती-लूती दागिले॥

●

अन्हरिया अंजोरिया

खेल के मैदान दु भाग में बँटल रहेला। एक भाग के नांव अन्हरिया आ दोसरका भाग के नांव अँजोरिया रहेला। एगो लइका अँजोरिया भाग में खड़ा होला। बाकी लइका

अन्हरिया भाग में खड़ा होले सन। ऊ दउर के अँजोरिया भाग में आवेलन स। अँजोरिया भागवाला लइका ओकनी के छुए दउरे ला। जइसे ऊ छुए दउरेला सब लइका बोल बोलत अपना भाग में भाग जाले सन।

"तहरा अँजोरिया में ढब ढब कीरा"

अँजोरिया भाग बाला लइका जेकरा के छू देला ऊ ओकर जगह पर काम करे लागेला। छुएवाला लइका सभ लइकन में मोल जाला। कुछ देर बाद खेल खतम हो जाला।

●

कोदो दरउअल

एह खेल में एगो लइका जमीन पर बइठ जाला। ऊ अपना दहिना हाथ के मुट्ठी बान्ह के अँगूठा ऊपर उठा लेला। मूठ्ठी जमीन से सटा के वृताकार घुमावेला। आउर लइका सवाल करेलेसन आ ऊ जबाब देला—

सवाल—का दर तारू ?
जबाब—कोदो।
सवाल—केकर कमाई ?
जबाब—सरपुतवा के।
सवाल—सरतुतवा काँहाँ गइल बा ?
जबाब – सिरकी ताने।
सवाल—सिरकिया में से देबू ?
जबाब—आग-भउर लेबू ?

सवाल – कोदो दरउअल, कि चीपरी पथउअल, की कपड़ा सिअउअल कि सूई में डोरा लगउअल कि लंगड़ी कछउअल ? कोदो दरेवाला लइका जवना खेल के नांव रख देला, ऊहे खेल सुरू हो जाला।

●

माटी जीतात

दुगो लइका माटी सानके बइठ जालेसन। ओकनी का आपन माटी गोलिया के कटोरी लेखा बना लेलन स। ओके अपना तरहथी पर उठाके दुनु कानके लगे पारा-पारी ले जालेसन आ कहेलेसन।

हे काने लोटा
हे काने थरिया
मुरगा बोले
कुकुड़ू कू

कटोरी के उलट के भुइयां में जोर से पटकेलेसन। कटोरी के पेनी उड़ जाला आ जोड़ से आवाज होला। जेकरा कटोरी के पेनी जेतना उड़ल रही ओकरा बराबर माटी ऊ दोसरा लइका से वसूली। जेकर जेतने पेनी फूटी ऊ ओतने माटी जीती।

●

हरदी गुरदी लायची

ई खेल तीनगो लरिकन के बीचे होला। दुगो लइका आपन आपन एकहेगो हाथ जोड़ा लेलेसन। तीसरका लइका ओह

दुनु के कान्ह पर आपन दुनु हाथ रख लेला। आपन दहिना गोड़ फनाके ओकनी के जोरावल हाथ पर रख देला। दुनु लइका बोल-बोलत दउरेलन स। ऊपर चढल लइका लंगड़ी काछत संगे-संगे दउरेला। साथे-साथ बोल बोलेलेसन—

हरदी गुरदी लायची

बेनिया डोलायची

●

मूस बिलाई

सब लइका गोलाई बनाके खड़ा होलेसन। एगो लइका बिलाई बनके खाना बनावेला। खाना बनाके बिलाई शिकार करे जाले। तले एही बीचे एगो दोसर लइका मूस बनके आवेला आ बिलाई के खाना खाए लागेला। एही बीचे बिलार आ जाले। ओके देखके सभ लइका चिलाए लागेले सन—

भाग-भाग मुसरी

बिलाई आवता

मूस एगो लइका के पीछे जाके खड़ा हो जाला। बिलाई जब आपन खाना खाए जाले त खाना के तहस-नहस देखके ऊ मूसके खोजे लागेले। जब मूस के देख लेले त ओके रगेदे लागेले। मूस भागे लागेला। एकनी के भागे के जगह, लरिकन के सटले-सटले चाहे ओकनी के बीचे-बीचे रहेला।

●

राजा परजा

सब लइका एक जोराहे से हाथ धराके एक पाती में खड़ा हो जाले सन। पाती के अरिया-परिया जे एकहेगो लइका रहेले-सन ओमे से एगो राजा आ एगो परजा बनेला आ एकनी के बीच में सवाल जबाब होला।

राजा--ए परजा ?
परजा—का राजा !
राजा—खेत कतना ?
परजा— बिगहा पचीस।
राजा—दूध केतना ?
परजा—सितुही भर।
राजा—पानी केतना ?
परजा— घुँघुची भर।
राजा—दुआर केने ?

परजा आपना हाथ से जवना लइका के हाथ धइले रहिहें ओही के बीचे दुआर बता दीहें। राजा ओ पड़े ढुकिहें। परजा के लगे के लइका के छोड़ के सब लइका राजा के साथे-साथे ओ दुआर पड़े ढुकिहें सन। परजा के लगे वाला लइका पीछे पड़े घुम जाई। ओकर हाथ बन्हा जाई। बाकिर ऊ अपना बगल वाला लइका के हाथ ना छोड़ी। एह तरे राजा के दुआर

पड़े बार-बार ढुकला निकलला से सभ लइकन के हाथ बन्हा जाई। एकरा बाद सभ बइठ जइहेसन। ओकरे साथे राजा परजा बइठ जइहें। राजा सब लइकन के पीठ पर अपना हाथ से पारा-पारी ठोकिहें। आ कहिहें कि हरदी पीस हरदी। बीच में एक ब बुक राजा भगिहें उनके धरे खातिर लइका दउ-रिहें सन। जे पहिले उनके छूँ दी ऊ फेर राजा बनी।

●

हमार घोड़ी बिरवनी

दूगो लइका आपन-आपन दहिना आ बायां हाथके तरहथी एह तरे उलिट देले-सन कि दुनो कानी अंगूरी के नोह आ दुनु अंगूठा के नोह आमने सामने पड़ेला। बीचली अंगुरी के छोड़ के बाकी अंगुरीन के एक दूसरा से फँसा देले सन आ दुनु बीचली अंगूरी के आगे पड़े निकलले रहेलन स। दुनु बीचली अंगुरी के घोड़ी मान लेले सन। एगो लइका दोसरा से पूछेला कि तहार घोड़ी कवन रही ? ऊ जवना अंगुरी के बताई ओकरा के अस्थिर कके दोसरका बीचली अँगुरी से बीरावेलनस आ कहेलनसं--

तहरा घोड़ी के टाँग टूटल
हमार घोड़ी बीरवनी

●

जय कन्हैया लाल की

दूगो लइका आमने सामने खड़ा हो जाले सन। आपन दुनु हाथ एक दोसरा का ओर फइला लेले सन। ओमें से एक

लइका अपना दहिना हाथ के तरहथी से अपना मुँह पर ठोकेला आ 'आँ आँ-आँ' के आवाज करेला। ओकरा बाद ओह हाथ के तरहथी के अपना बायां हाथ के केहुनी पर रख देला। आ बायां हाथ के सीधा रखले रहेला। दोसरका लइका भी एही तरे करेला। एकरा बाद पहिलका लइका अपना बायां हाथ के तरहथी के दोसरा लइका के दहिना हाथ के केहुनी पर रख देला। दोसरका लइका भी अपना बायां हाथ के तरहथी के पहिलका लइका के हाथ के केहुनी पर रख देला। एह तरह से चारू हाथ मिलाके तीनगो खान्हा बन जाला। एगो तीसर लइका बीच वाला खान्हा के छोड़ के अगल-बगल वाला खान्हा में एकहेगो गोड़ डाल के ओपर बइठ जाला। दुनु लइका ओकरा के टांग के घुमावेले सन। आ बोल बोलेलेसन।

जय कन्हैया लाल की, मदन गोपाल की,
लइकासन के हाथी घोड़ा, बुढ़वासन के पालकी

●

घरौंदा--खेल

लइका लइकी मिलके धूरा के घर बनावेले सन, जवना में कइगो कोठरी दुआर रहेला। ओमें रसोइया घर भी रहेला। ओमे माटी के खाना बनेला। पूआ पाकेला आ दियरी में परोसाला।

●

डेबा-डेबी

एह खेल में तीनगो लइका रहेलन स। एगो लइका डिबी-डिबी कहके ललकारेला। बाकी दुनु आपन आपन मूड़ी लड़ावेलन स।

●

पंजा-लड़ावल

दुगो लइका आपन-आपन दहिना हाथ के पंजा एक दोसरा से लड़ावेलन स। जेकर पंजा पीछे मुंहे मुड़ जाला ऊ हार जाला।

●

चन्दा मामा

ई खेल आठ नव बरिस के लइका लइकी खेलेला। हाथ फइला के घुमरी खेल-खेल के बोल-बोलेलेसन। ई खेल साँझ के बेरा खेलल जाला। घुमरी खेलत-खेलत लइका ढिमला जालेसन ओकनी के बुझाला जे चकोह मारता।

चक डोले चक बमक डोले।
खैरा पीपर कबहुँ ना डोले॥

●

आँखमुदउअल

एह खेल में एगो देवाल के कोठा मान लियाला। चोर लइका देवाल का ओर मुँह कके आपन आंख दुनु हाथ से अगल

बगल बन्द करलेला। आ मुँह के देवाल से सटवले रहेला। बाकी लइका बोल बोलते भाग के लुका जाले सन। थोड़े देर के बाद चोर लइका आपन आँख खोल के ओकनी के खोजेला। जेकरा के छू देला उहे चोर बनेला।

(क) खोलऽ केवाड़ झकझुमरी
तहार भइया लेअइले चुनरी
(ख) ए बनवारी खोलऽ केवाड़ी
तहरा घर में लंहगा-साड़ी
आन्हर कनियां बूढ़ महतारी
दुनु रोवे पारा-पारी

●

घोड़ा के खेल

एह में एगो लाठी के जरूरत होला। । एगो लइका लाठी के अपना दुनु गोड़के बीच में कर लेला। आगे थोड़ा-सा लाठी निकलल रहेला। ओके ऊ दुनु हाथ से पकड़ ले रहेला आ आगे आगे बढ़त जाला। ऊ कल्पना करेला कि हम घोड़ा पर चढ़ल बानी।

दिन दहाड़े खेत उजाड़े
पांड़े जी के घोड़ी
पांड़े जी से बढ़ के निकलल
पांड़े के जोड़ी

●

घोघोरानी

एह खेल में कुछ लइका मिलके एगो गोलाई बना लेलेसन। गोलाई के बीच में एगो लइका खाड़ा हो जाला। मान लेहल जाला कि बीच वाला लइका नदी में नहाए खातिर समाइल बा। ओकर नांव घोघोरानी रखाला। घोघोरानी आ गोलाई के लइकन के बीच सवाल जबाब होला।

लइका--घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी -एँड़ीभर।
लइका—घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी—ठेहुँनभर।
लइका—घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी- जाँघभर।
लइका—घोघोरानी ! केतना पानी !
घोघोरानी--डाँड़भर।
लइका—घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी—छातीभर।
लइका—घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी—गरदन भर।
लइका- घोघोरानी ! केतना पानी ?
घोघोरानी--केसभर।

केस भर पानी कहके घोघोरानी डबे के नाटक करीहें। उनुकाके लइका सभ मिलके निकासेलन । जब घोघोरानी निकल जइहें त फेरू लइका गोलाई में खाड़ा होखेलन स। घोघोरानी दुनु लइकन के धरावल हाथ के दुआर मानके ओकनी से पूछिहें, हई दुअरिया काटीं ? सभ दुआर पर उनुके जबाब मिली 'माई खिसिआई'। घोघोरानी एक ब एक कवनो दुआर काटके भगिहें। सभ लइका उनुके पीठी अइहेंसन। घोघोरानी के जे पहिले छू दी ऊहे घोघोरानी बनी।

●

लँड़ूर चढ़ावल

एगो लइका के नाक पर डोरा रख के पीछे से कस के बान्ह दिआला। ओकर दुनु हाथ पीछे कके गमछा से बान्ह दिआला। पीछे खड़ा होके एगो लइका ओकर चिरूकी दुहेला आ ओह लइका के सुरूज का ओर मुंह कके खड़ा करा देला। ऊ सुरूज का ओर कुछ देरले ताकत रहेला। कुछ देर का बाद ऊ सनकु आदमी के नकल करे लागेला। कल्पना कइल जाला कि ओकरा पर लँड़ूर बाबा चढ़ल बाड़े। ऊ बाकी लरिकन के पीठिआवेला। ओके सभ लइका लँड़ूर बाबा कहके रिगावेलेसन। ऊ जेकरा के छू देला फेर ओकरा पर लँड़ूर चढ़ावल जाला।

●

चिल्हिया चिल्होर

सभ लइका दु पाटी में हो जालेसन आ एकहेगो ठिकरा लेलेसन। चिल्हिया चिल्होर कहके दुनु भाग के लइका अलग अगल हो जाले सन। ऊ लुका के भूँइया में लकीर पारेले-सन। फेर चिल्हिया चिल्होर कहके एकजगे जमा हो जाले सन। दुनु पाटी के लइका साथे साथे आपन आपन लकीर के संखेआ गिनावेलेसन। जेकर संखेआ दोसरा से जेतना अधिका होई ऊ ओतने मुका कम संखेआ वाला लइकन के मारी। मुका के बखरा लरिकन के संखेआ पर बटाँजाला।

●

मूत-पिआना

एगो लइका बइठ के आपन एगो टँगरी पसार लेला आ अंगूठा के ऊपर उठवले रहेला। सभ लइका ओके फाने लेसन। कोरसिस करेलेसन कि ओकरा टँगरी से देह ना छुआई। ठीक फान गइला पर बइठल लइका ओह टँगरी के अंगूठा पर आपन दोसरकी टँगरी रखेला फेर सभ लइका ओके फानेलेसन।

एहबेरी भी ऊ केहुके देह से ना छुआइल त ऊ आपन ऐगो हाथ फइला के कानी अंगूरी गोड़ के अंगूठा पर रखेला आ हाथ के अंगूठा ऊपर ऊठवले रहेला। फेर लइका फानेलेसन। बेदाग फान गइला पर ऊ आपन दोसरका हाथ के कानी अंगूरी ओपर रखेला आ अंगूठा के ऊपर माहे उठवले रहेला। जबले केहु के देह से ना छुआई तबले ऊ ऊँचाई बढ़वले जाला। जेकरा देह से ओकर हाथ छुआ जाला ऊ चोर पड़ जाला।

जवन लइका सभके फनावत रहेला ओकर नांव मूतपिअना धराला। ऊ पेसाब के बहाने कुछ दूर चल जाला। चोर पड़ल लइका जमीन पर बइठ जाला सभ लइका ओके कुरुसी मानके ओपर बइठेलेसन। जब ओकर सांस फुले लागेला त ऊ मूतपिअना के चाल करेला। मूतपिअना के आवते सभ लइका ओके छोड़के भाग जालेसन। मूतपिअना ओकनी के पीठिआवेला। जेकरा के छू देला ऊ फेर मूतपिअना बनेला।

●

नीलीसारी-पीलीसारी

सभ लइका दु भाग में बँट जालेसन। दुनु भाग के लइका आपन-आपन एकहेगो मेठ चुनेलेसन। एगो मेठ नीलीसारी आ दोसरका मेठ पीलीसारी कहाला। दुनु मेठ लोग अँकड़ी

बुझावेला। जे बूझ जाला ओकर पहिले दाव मिलेला। सभका चूपे मेठ अपना-अपना लइकन के नांव एकहेगो फल के नांव पर रखेला। दाव के मेठ अपना लइकन से कहेला कि अपना फाँड़ के भीतर दुनु हाथ धर लोग। एही बीच में अँकड़ी के केहु फांड़ में चुपे धइ देला। दोसरा भाग के कक्नो एगो लइका के आँख मूनलेला। आ अँकड़ी वाला लइका के बोलाके ओकरा मुड़ी में ठोकवावेला। अँकड़ी वाला लइका सभ लरिकन में आके बइठ जाला। सभ लइका थपरी बजावे लागेले सन। जवना के आंख मूदल रहेला ओकर आंख खोल दियाला। ऊ अँकड़ी वाला लइका के खोजेला। जदी ऊ सही लइका के खोज दी त ऊ दोसरा भाग के एगो लइका जीत ली। जदी ना खोजलस त ऊ खुदे जीता जाई। एक भाग के सभ लइका जीता गइला पर मेठ दोसरा भाग से लइका पँइचा ले सकेला। ओकराके जीता गइला पर ऊ लइका भीख में माँग सकेला।

धीरे धीरे जइहऽ
सोर मत मचइहऽ
नीचे मुड़ी गाड़के
थपरी बजइहऽ

●

कुकुहा

एह खेल में लइकन के संखेआ निहचित ना रहेला। जगो लइका रहेलेसन तगो पतई लेके ओके तर ऊपर रख के सजा

दियाला। एगो कवनो पतई में छेद क दिहल रहेला। लइकन से एकहेगो पतई खिचवावल जाला जे छेद वाला पतई के खींच लेला ऊ चोर पड़ जाला। ई खेल कवनो गाछ के नीचे खेलल जाला गाछ के नीचे एगो गोलाई बनावल जाला। गोलाई में खड़ा होके एगो लइका एक हाथ के डंटा अपना मुँह के लगे ले जाके कु कू हू कू कहके अपना दुनु टँगरी के बीच से बीगेला। चोर लइका ओइ डँटा के लेआवे जाला। एही बीचे सभ लइका गाछ पर चढ़ जाले सन। चोर लइका डँटा ले आके गोलाई में रख देला।। गाछ पर चढ़के लइकन के छुएला। ऊ जेकरा के छू देला ऊ चोर पड़ जाला। जदि ओकरा छुए के पहिले कवनो लइका गाछ पर से उतर के डंटा के फेंक देला त फेर चोर के धावेके परेला।

●

अन्हाथोपी

एमें चार-पांच खेलाड़ी के जरूरत होला। एगो लइका अपना बांया हाथ के तरहथी पसारेला बाकी लइका ओकरा तरहथी पर एकहेगो आपन अंगुरी रखेलेसन। ऊ अपना दोसरा हाथ के तरहथी के ओकनी के अंगुरी के ऊपर घुमावेला आ पूछेला कि हेतना पर के लीपीं? सभ लइका कहेलेसन माई

खिसीआई'। ऊ अपना तरहथी के घुमावत घुमावत ओकनी के अंगुरी का लगे ले ओवला। जब तरहथी, अंगुरीन के बेलकुल नजदीक आ जाला तब ऊ कहेला कि ऊपर ताक लोग। जब लइका लोग ऊपर ताके लागेला तब ऊचट से अपना दुनु तरहथी के सटा देला। लइका लोग पूरा सावधान रहेला। ओकरा तरहथी सटावे का पहिले ऊ लोग आपन अंगुरी खींच लेला। बाकी जेकर अंगुरी जँता जाला ऊ चोर पड़ जाला। चोर लइका के आंख एगो लइका अपना दुनो हाथसे बनकर लेला। बाकी लइका ओकरा मुड़ी में ठोकरियावेलेसन। जब सभ लइका ठोकरिया लिहँसन त ओकर आंख खोल दियाला आ ओसे पूछाला कि पहिले के ठोकरियावल ह। जदी ऊ सही लइका के नाव बता दिहलस त जवना के नांव बताई ऊहे लइका चोर पड़ जाई जदी सही नांव ना बतवलस त फेर ऊहे चोर पड़ी।

●

बेटा-लेब कि बेटी ?

ई खेल पानी में नहात का बेरा खेलल जाला। दस-बारह लइका पानी में खड़ा रहेलेसन। कवनो एगो लइका पूछेला बेटा लेब कि बेटी ? पूछेवाला लइका पानी में चिटुकी बजावेला। जदी पानी टुभसे आवाजकरी त बेटा मनाई। धीरे से आवाज करी त बेटी मनाई। मांगेवाला लइका जवन चीज

लंगले रही ओकरा उल्टा भइलवा पर मांगेवाला लइका चोर पड़ जाई। जदि ओकरा मंगला के अनुसार होई त फेर ऊ दोसरा लइका से पूछी। एह तरे केहू ना केहू जरूर चोर पड़ जाई। चोर लइका से पुछाई झाल लेब कि तलवार। जदी ऊ तलवार मांगी त पानी में एक हाथे छपाका मारल जाई, जदी ऊ झाल मांगी त पानी में थपड़ी बजावल जाई छपाका चाहे थपरी के पानी जेतना दूर जाई चोर लइका पानी के ओतना दूर छुए जाई। एही बीचे सभ लइका पँवड़ के भाग जइहेंसन। चोर लइका ओह लोग के छुए के कोरसिस करी। जे छुआ जाई ऊ चोर पड़ जाई।

●

गुली डंटा

खेलाड़ी लोग दु दल में बँटल रहेला। एह खेल में सवा हाथ के डंटा आ एक मूठ के गुली के जरूरत होला। गुली के दुनु छोर चांसल रहेला जेके डंटा से मारला पर ऊ ऊपर उड़ सके। एगो छोटीचुकी कुपी भूई में खोन दियाला। दुनु दल के लइका पारा-पारी दहिना आ बांया हाथ से गुली तूरेले सन। दुनु दल के लइकन के गूली तुरला के संखेआ अलग अलग जोर दियाला। जेकर ढेर होला ओकरे पहिले दाव मिलेला एगो संखेआ तय रहेला कि हेतना में खेल होई। जवना दल के पहिले दाव पड़ी ओकर सगरी लइका पारा पारी कुपी पर गुली रख के ओमें डंटा लगा के गुली के उछलिहेंसन। गुली के उछलला के साथे साथे पिछांत कहेलेसन। दोसरा दल के लइका गुली के लोकेलेसन। अगर

गुली लोका जाई त फेंके वाला लइका के दाव चलजाई। अगर गुली ना लोकाई त फेंकवाला लइका कुपी से हाथ भर दूर डंटा के रख दी आ दोसरा दल के लइका गुली के कुपी में फेंकेलेसन। जदी फेंके वाला लइका पिछांत कहले रही त फेंके वाला लइका गुली के ओह जगे से जहां गुली गिरल रही, एक डेग पीछे हट के फेंकी। जदी पिछात कहे वाला के पहिले दोसरा दल के लइका आगात कह दी त फेंकेवाला लइका गुली के एक डेग आगे बढ़ के फेंकी।

गुली कुपी में गिर जाई त ऊ दल जेतना लमर पूजवले रही ऊ सभ खतम हो जाई। जदी गुली कुपी से डंटा भर दूर गिरी त फेंके वाला लइका के दाव खतम हो जाई। जदी डंटा पर, भी लागी तबो दाव खतम हो जाई। तीनु मेंसे कवनो ना भइल त फेंकेवाला लइका अपना डंटा से गुली के नचा के तीनबेर मारी। एह तीनबेर में गुली जेतना दूर कुपी से गिरी ओकर दूरी डंटा से नपाई। नापे में जदी गंलती हो गइल आ दोसर दल के लइका मेचा कह दिहलस त सभ इनकर कइल माटी हो जाई। इनकर दाव भी खतम हो जाई। जवन गोल पहिले पांच सई डंटा पूजा दी चाहे जेतना तय भइल रही ओतना पूजा दी, ऊ जीत जाई। जीतेवाला गोल के लइका फेर गुली तुरीहेंसन। जवन लइका जवना हाथे जगो गुली तुरले रही ओही हाथे ओतना डंटा गुली पर आगे आगे मारत जाई। सभ लइका एह दल के मारत जइहेंसन। बीच में जगो मारेवाला दाव खाली गइल रही ओतना डंटा मारके दोसर दल वाला गुली के मार मार के पीछे पड़े लवटीहेंसन। तब गुली से कुपी के जेतना दूरी रही ओके बड्डी-बड्डी कहके पारा पारी पदीहेंसन। जब एगो लइका के सांस टूटे-टूटे होई

तब ऊ हाथ उठा दी ओकर सांस टूटे का पहिले दोसर लइका पादे लागी।

●

आम छू—आम छू

एह खेल में अठारह खेलाड़ी के जरूरत होला। खेलाड़ी लोग के दु दल होला। हर दल में नवगो खेलाड़ी रहेले। खेल के मैदान दु बरोबर भाग में बँटल रहेला। दुनो भाग के बीच में एगो चिन्ह खींचले रहेला। कवनो एगो दल के कवनो एगो लइका बोल बोलत दोसरका दल में ढूकेला। जदी बोल बोलत ऊ बिपच्छी दलके जगो खेलाड़ियन के छू के अपना गोल में चल आवेला ओतने पाइन्ट छुए वाला दल के मिलेला। जदी बोल बोलेवाला लइका के ओकर बिपच्छी दल के लइका पकड़ लेलेसन आ ओकर सांस तूरी देलेसन त बिपच्छी दल के एगो पाइन्ट मिल जाला त जेकर अधिक पाइन्ट होला ऊहे दल जीतेला।

खेल के बोल—

(क) आम छू—आम छू
अमवा घवद छू

(ख) चल कबड्डी धाइले
तबला घुड़ काइले
तबला में पइसा
लाल बगइचा।

●

भोजपुरी साहित्य मन्दिर के

अनमोल प्रकाशन

जीरादेई से सदातक आश्रम तक
स० राधा मोहन राधेश, दाम—१.७५

गाँधी गाथा
स० राधा मोहन राधेश : प्रो० वीरेन्द्र नारायण पांडेय
दाम—१.००

प्रेम कथा
स० राधा मोहन राधेश, दाम—१.००

माटी के दीआ धीव के बाती
(सामाजिक भोजपुरी नाटक)
सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश', दाम—२.००

सेंदुर के लाज
(सामाजिक भोजपुरी उपन्यास)
राधा मोहन राधेश, दाम—२.००

एहवातिन धरती
(भोजपुरी के प्रतिनिधि कहानियन के संग्रह)
स० राधा मोहन राधेश: प्रो० वीरेन्द्र नारायण पांडेय
दाम—३.००

रहनिदार बेटी
(सामाजिक भोजपुरी उपन्यास)
जगदीश ओझा 'सुन्दर', दाम—२.००

भोजपुरी बिगुल
स० राधा मोहन राधेश, दाम— ०.३०

मिले के पता—

भोजपुरी साहित्य मन्दिर

जगतगंज, वाराणसी—२